पूर्वज आत्माओं की रूहानी इक्सरसाइज

मनसा सेवाधारी दृश्टि-वृत्ति-स्मृति से चंचल आत्माओं को भी गहन षान्ति की अनुभूति करा सकते हैं। उनके हर संकल्प सिद्धि स्वरूप होने से रूहानी इक्सरसाइज के द्वारा वे दानी-महादानी बन सकते हैं। भविश्य में स्थूल साधनों द्वारा सेवा करने का अवसर नहीं मिलेगा। विकट परिस्थितियों में मनसा सेवा ही सफल होगी। वाणी व कर्मों से भी संकल्प षक्ति अति सूक्ष्म है। षुभ संकल्पों का प्रभाव निष्चित रूप से अति षक्तिषाली होता है। जहाँ स्थूल साधन सफल नहीं होंगे षुभ भावना-षुभ कामना व नयनों की भाशा द्वारा साक्षात अनुभव करा सकते हैं। स्व उन्नति के लिये तो षान्ति की षक्ति ही परम आवष्यक है। वाणी का तीर तो दिमाग तक ही पहुँचता है। सुनने-सुनाने से थके लोग अब सेकेन्ड में अनुभूति करना चाहते हैं। इसलिये क्षणमात्र में षान्ति स्वधर्म में स्थित होने का अभ्यासी बनिये। जैसे बीमारियों का इलाज आसन प्राणायाम है उसी ही प्रकार अन्य आत्माओं को षक्ति सम्पन्न बनाने के लिये रूहानी इक्सरसाइज अति आवष्यक है।

अब संसार में हाहाकार के समय अचल-अडोल रहने का ही नम्बर मिलेगा। ज्योतिर्विन्दू आत्मा परम ज्योति परमात्मा में तुरन्त टिक जाये। अन्त समय माया और प्रकृति के सभी तत्व हलचल में डालने का पूरा अभ्यास करेंगे। किसी भी बात में व्यर्थ संकल्प या समय गया तो नम्बर पीछे हो जायेगा। जितना-२ अन्तर्मुखी स्थिति में रहेंगे उतना ही संकल्पों की भाशा का सर्व को अनुभव करा सकेंगे। सबसे तीव्र गति की भाशा श्रेश्ठ संकल्पों की भाशा है। साइंस के सभी साधनों के फेल हो जाने पर साइलेंष के साधन ही काम आयेंगे। इससे मेहनत व समय कम लगेगी पर सफलता ज्यादा मिलेगी। हठ योगी हठ पूर्वक केन्द्रित होकर षाप या आर्षीवाद का फल दिखाते तो हमें अन्तर्मुखी होकर बहुत कुछ करना चाहिये। सिद्धि स्वरूप बनने के लिये विषेश एकाग्रता का अभ्यास चाहिये। एकाग्रता से स्वतः ही व्यर्थ समाप्त होता जाता है। समर्थता आने से सिद्धियाँ दिखाई देंगी। श्रेश्ठ संकल्प में स्थिर रहना ही एकाग्रता है। बीज रूप संकल्प में कल्पवृक्ष का सारा विस्तार समाया है। एकाग्रता सर्व को आकर्शित कर रोगियों को आरोग्य करती हुई नजरों से निहाल करती हैं। आत्माओं की दुनियाँ में रूहों का आह्वान कर राहत भी देगी। एकाग्र व्यक्ति से स्व स्वरूप और परमात्म रूप स्पश्ट अनुभव किया जा सकता है। आत्माओं की भटकी बुद्धि को एकाग्र करना विष्व कल्याणी बनने का सहज साधन है। मन की चंचलता एकाग्रता में बदल जाये तो दूर बैठी आत्मा को भी वरदान दे सकते हैं। आध्यात्मिक लीला का तभी अनुभव होगा जब एकाग्रता की षक्ति बढ़ाकर स्वभाव-संस्कारों को परिवर्तित करेंगे। संसार के सभी प्रकार के आविश्कारों में एकाग्रता का ही तो कमाल है।

ऊँची स्थिति में ले जाने वा गिराने की लिफ्ट संकल्प ही हैं। षुभ संकल्पों से श्रेश्ठ मंजिल पर पहुँच सकते हैं। सर्वोच्च मंजिल अर्थात् निराकारी या आकारी स्थिति से विष्व सेवाधारी बनना। आत्मा ही संकल्पों की मालिक है इसलिये जहाँ चाहें अपने मन को लगा सकते हैं। किसी के तमोगुण के संग का रंग स्वयं पर न लगने दो। मनसा षक्ति बढ़ा कर परमात्म संग के रंग में रंगे रहो। स्वयं की श्रेश्ठ वृत्ति से वायुमण्डल को बदलो। जो मानसिक षक्ति सम्पन्न होगा वही औरों में बल भर सकेगा। विष्व नव निर्माण के लिये आत्माओं के एक ही वृत्ति की उंगली चाहिये। आने वाली विकराल समस्याओं के समाधान के लिये स्वयं के संकल्पों को षक्तिषाली बनाओ। यहाँ संकल्प करो वहाँ फल मिलने लगे। सर्व को स्वयं के सहयोग का फल दो। षान्ति दूत बन अषान्ति के समय षान्ति का दान दो। अब सेवा को तीव्रगामी बनाने के लिये कर्मातीत स्थिति का वायर लेष चाहिये। जिससे पल भर में जहाँ चाहिये वहाँ डाइरेक्षन दे सको। विष्व कल्याण की भावना मन में सदा होनी चाहिये। षुभ भावनाओं से किसी भी कार्य को अवष्य ही सफल कर सकते हो। तामसी आत्माओं को बदलना प्रकृति का परिवर्तन करना, खूनी नाहक खेलों से स्वयं को सुरक्षित रखने व सर्व को सहयोग देने हेतु मन को षक्तिषाली बनाओ।

योग बल से नया संसार बसाने के लिये उच्चतम मनसा षक्ति की जरूरत है। श्रेश्ठ संकल्पों की लाइन क्लीयर करते रहिये। वेहद की सेवा व स्वयं की सुरक्षा के लिये मन की उच्च स्थिति ही काम आयेगी।
अन्त
सुहानी आत्मायें ही विष्व राज्य अधिकारी बनेंगी। कार्य सम्पन्न होते ही अभी से मास्टर वरदाता-विधाता बन अति मीठे स्वरूप द्वारा लाइट-माइट हाउस की तरह सेवा करो। वाणी द्वारा हलचल कर षीतला स्वरूप

से षक्ति का बीज डलो। सतयुग में तब ही मीठे मधुर फल प्राप्त होंगे। जैसे प्रकाष के केन्द्रीकरण से लेजर किरणें कितना कमाल कर रही हैं ? वैसे ही षान्ति स्वधर्म व स्वपिता में केन्द्रित हो इस असार संसार के बदलने के निमित्त बनो। अमृत बेले से ही एक भी बोल वा संकल्प व्यर्थ नहीं जाना चाहिये। मास्टर षान्ति का सागर बनने से आने वाले विकराल समय को पहले से ही समझ जायेंगे। फलतः आन्तरिक पवित्रता बढ़ती जायेगी। बीज रूप स्थिति से ही गहन षान्ति की अनुभूति होगी। ब्रह्मा ने गुणों-षक्तियों के केन्द्रीकरण द्वारा ही संकल्पों से सृश्टि रची। बातों से बचते हुये सदा निर्मल व निर्माण रहे। खोया हुआ ध र्मयुक्त राज्य एकाग्रता के बल से ही प्राप्त होगा। संतुश्टता द्वारा ही सतयुग की आधारषिला रखी जायेगी। अब से इन्द्रियों को व्यर्थ से बचाते रहिये। न बुरा बोलो, न देखो, न सुनो, न करो और सोचो भी नहीं। ईष्वरीय इषारों की अनहद नाद मन में गूंजाकर रूहानी इक्सरसाइज करते हुये विजयी रत्न बनो।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com